जब राक्षस दोस्त बन जाए

पोम्पा घोषाल

अक्सर हम सभी ने अपनी दादी-नानी की कहानियों में 'राक्षस' शब्द सुना होता है और यह शब्द सुनते ही हमारे दिमाग़ में एक डरावनी तस्वीर उभरने लगती है। कुछ ऐसा ही अनुभव मैं आपके साथ साझा करने जा रही हूँ।

यह उन दिनों की बात है जब मैं इस स्कूल में बिलकुल नई-नई आई थी। मेरे लिए भी एक ऐसे स्कूल में अँग्रेज़ी का सहायक बनना नया अनुभव था जहाँ अँग्रेज़ी द्वितीय भाषा हो। मैंने देखा कि प्रत्येक बच्चे विशेषकर उच्च प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के लिए अँग्रेज़ी किसी 'राक्षस' से कम नहीं थी। इसकी एक वज़ह यह थी कि स्कूल के बाहर और उनके आसपास के परिवेश में कोई अँग्रेज़ी में बात नहीं करता था (जबकि किसी भी भाषा को सीखने के लिए उसे सुनना सबसे पहला चरण होता है।) तो, यदि आपकी किताब में कहानियाँ व लेख हों और बच्चा प्रत्येक वाक्य में चार या पाँच से ज़्यादा शब्द पढ़ने-समझने में असमर्थ हो तो पूरे पाठ को समझना वाकई में एक चुनौती बन जाता है। मैंने देखा कि बच्चों के अँग्रेज़ी से भयभीत होने की एक वज़ह यह भी है।

मुझे अपनी कक्षा में कई मुरझाए चेहरे देखने को मिलते। वे पूछते कि मैं उन्हें यह डरावना विषय क्यों पढ़ाना चाहती हूँ।

इस धारणा को कैसे दूर किया जाए? यह एक बड़ी चुनौती थी क्योंकि यह धारणा बच्चों को अँग्रेज़ी के साथ सहज नहीं होने दे रही थी। अब इस समस्या से कैसे निपटा जाए? यह मेरे लिए एक बड़ा प्रश्न था। फिर भी किसी तरह मैंने शुरुआत की और रोज़ाना मैं शब्दों या कुछ उदाहरणों के माध्यम से उन्हें प्रेरित करने का प्रयास कर रही थी। लेकिन मैंने देखा कि अभी भी बच्चे अपने-आप अँग्रेज़ी पढ़ने और लिखने से कतरा रहे हैं। कक्षा सात के तीस बच्चों में से केवल दो बच्चे ऐसे थे जो अँग्रेज़ी पढ़ पाते थे, वह भी हिचकते हुए। इन दोनों बच्चों को थोड़ा प्रोत्साहित करते हुए मैंने कक्षा में छह बच्चों को अँग्रेज़ी पढ़ने के लिए तैयार किया। फिर मैंने कुछ मिश्रित समूह बनाए जिसमें वे लोग अँग्रेज़ी पढ़ने में एक-दूसरे की मदद कर सकें। धीरे-धीरे कक्षा के दो-तिहाई बच्चे ज़ोर से बोलकर पढ़ने में समर्थ हो गए। अँग्रेज़ी पढ़ने को लेकर अब उनमें थोड़ा आत्मविश्वास आ गया था। उन्हें स्वतंत्र रूप से पढ़ते देखकर मुझे ख़ुशी हुई।

लिखना व बोलना अब भी चुनौती बना हुआ था। बच्चे हमेशा मुझ से बने-बनाए उत्तरों की माँग करते। वह उत्तर खोजने की कोशिश भी नहीं करते। कोशिश तो दूर वह कभी यह सोचते ही नहीं कि वह अपने-आप भी उत्तर लिख सकते हैं। मैं उनके अन्दर यह आत्मविश्वास पैदा करने के लिए संघर्ष कर रही थी।

ख़ुशक़िस्मती से मुझे एक रास्ता मिल गया। हम अपनी पुस्तक के पाठ 'एलिस इन वंडरलैंड' पर पहुँच गए थे। यह एक बहुत ही दिलचस्प कहानी है जिसका पहला भाग कक्षा 6 में, दूसरा भाग कक्षा 7 में व तीसरा भाग कक्षा 8 में दिया गया है। मैं कक्षा 7 को पढ़ा रही थी। इसलिए मैंने इस पाठ की शुरुआत कक्षा 6 व 7 में दी गई कहानी के सारांश से की। लेकिन कहानी अभी अधूरी थी। हमारे विद्यालय में आठवीं कक्षा न होने के कारण कहानी का तीसरा भाग हमारे पास उपलब्ध नहीं था। हालाँकि हमारे पुस्तकालय में एलिस इन वंडरलैंड पुस्तक उपलब्ध थी लेकिन बच्चों को वह बहुत बड़ी और पढ़ने में मुश्किल लग रही थी। तो मेरी एक सहकर्मी जो कक्षा 6 को पढ़ाती हैं और मैंने मिलकर बच्चों को इस कहानी पर आधारित फ़िल्म दिखाने की योजना बनाई। मेरी सहकर्मी ने पूछा कि क्या हमें फ़िल्म हिन्दी में दिखानी चाहिए। लेकिन मुझे लगा कि अगर वे अँग्रेज़ी में फ़िल्म को देखेंगे तो उनके पास एक अवसर होगा ज़्यादा-से-ज़्यादा अँग्रेज़ी समझने की कोशिश करने और समझने का। फिर हमारे जिला संस्थान में यह फ़िल्म अँग्रेज़ी में दिखाई गई। बच्चों को फ़िल्म देखने में बहुत मज़ा आया और वे एलिस की कहानी समझ गए। वे फ़िल्म को अपनी पाठ की कहानी से जोड़ पा रहे थे और उन्होंने फ़िल्म और अपनी पुस्तक की कहानी में कई अन्तरों को भी पहचाना। धीरे-धीरे जैसे-जैसे वे कहानी से जुड़ रहे थे, वे कहानी और उसके चरित्रों के बारे में चर्चा करने के लिए अँग्रेज़ी की कक्षा में आने के लिए पर्याप्त रुचि लेने लगे थे। अभी तक हम कहानी पढ़ने-सुनाने और उसके स्वप्न वाले दृश्य की चर्चा करने में दस दिन बिता चुके थे। स्वप्न वाले दृश्य पर बच्चों ने अपने व्यक्तिगत विचार भी रखे कि 'बड़े होकर मैं क्या बनना चाहता हूँ।'

मैंने देखा कि यह पाठ हमारे लिए किसी 'जादुई दौर' की तरह था जिसने मेरी कक्षाओं को दिलचस्प बना दिया था। इसलिए मैंने कुछ और गतिविधियों के साथ इसे जारी रखने का सोचा। मैंने बच्चों से कहा कि क्यों न हम फ़िल्म की कहानी का अभिनय करें। वे कहने लगे, 'हम कैसे कर सकते हैं? हम

डायलॉग याद नहीं कर सकते।' मैंने कहा, 'हम अपने खुद के डायलॉग बना सकते हैं और एक नाटक तैयार कर सकते हैं।' वे बोले, 'हाँ यह हम कर सकते हैं लेकिन हिन्दी में।' 'लेकिन मुझे तो डायलॉग अँग्रेज़ी में ही चाहिए', मैंने कहा। शुरू में तो वे कहने लगे कि यह तो बहुत मुश्किल होगा लेकिन बाद में इस शर्त पर वो सहमत हो गए कि डायलॉग मैं लिखूँगी। इस पर मैंने कहा 'लेकिन यदि डायलॉग मैं लिखूँगी तो तुम्हें उन्हें याद करना पड़ेगा और वह ज़्यादा मुश्किल होगा। यदि हम साथ मिलकर स्क्रिप्ट लिखें तो आसानी होगी।' वे मान गए।

अब मुझे वह स्टेशन मिल गया था जहाँ से मुझे अपनी ट्रेन पकड़नी थी। बच्चे अपने नाटक के लिए स्क्रिप्ट लिखने को लेकर बेहद उत्सुक थे। सबसे पहले उन्होंने शब्दों का अनुवाद किया। मैं उनके सभी सुझावों को बोर्ड पर लिखती। उदाहरण के लिए उन्होंने को, क्या, पसन्द, पूछेगी, तुम्हें, सपना आदि के लिए अँग्रेज़ी शब्द खोज लिए थे।

स्क्रिप्ट लिखने की इस गतिविधि ने बच्चों को अँग्रेज़ी सीखने के लिए उत्साही बना दिया था। स्क्रिप्ट लिखने के दौरान उन्होंने कई नए शब्द और व्याकरण के कुछ नियम भी सीखे। स्क्रिप्ट पूरी होने में तकरीबन पन्द्रह दिन का समय लगा। इस दौरान बच्चे बेचैनी से अँग्रेज़ी के पीरियड का इन्तजार करते। अक्सर वे अगले सीन के लिए खुद को तैयार रखते और स्क्रिप्ट में बदलावों के लिए अपनी कल्पना का उपयोग करते।

स्क्रिप्ट लिखने के बाद बच्चों ने नाटक खेलने की तैयारियाँ शुरू कीं। आधे बच्चे नाटक खेलने का अभ्यास करने में लगे थे और बाकी के आधे नाटक के लिए आवश्यक सामग्रियाँ तैयार करने में। उन्होंने पेड़, घास, ताज और कार्ड चार्ट पेपर से बनाए। ऐसा लग रहा था जैसे सभी बच्चे इस नाटक का हिस्सा हों। इतना अच्छा सामूहिक कार्य मैंने इसके पहले कभी नहीं देखा था। सामूहिक कार्य में अद्भुत समन्वय का यह एक नमूना था। यह सब तैयारियाँ करने में दस दिन निकल गए।

और आखिरकार वह दिन आ ही गया। उस दिन शनिवार था जब कक्षा सातवीं के सभी बच्चे सबके समक्ष अपना नाटक प्रस्तुत करने के लिए तैयार थे। पूरे स्कूल ने नाटक का आनन्द उठाया और बच्चों ने खूब प्रशंसा बटोरी जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ा।

इस विशेष गतिविधि ने उनकी शब्दावली, वाक्य संरचना, सोचने, बोलने और सुनने के कौशल को बढ़ाने और पढ़ने व कल्पनाओं को लिखने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके बाद बच्चे अँग्रेज़ी की कक्षा में उसी तरह ध्यान देने लगे जैसे कि वे अन्य विषयों की कक्षाओं में देते थे और विषय को समझने और खुले मन से उसमें शामिल होने की कोशिश करने लगे। अब वे स्वत: ही अँग्रेज़ी पढ़ने-लिखने का प्रयास करने लगे। और यही नहीं एक कदम आगे बढ़कर उसे समझने का प्रयास भी करने लगे। ऐसा लगता जैसे कि वह 'राक्षस' अब उनका दोस्त बन गया हो जिसके साथ बात करना, मस्ती करना और खेलना वे पसन्द करते।

इस प्रक्रिया के दौरान मैंने भी कुछ सीखा। मैंने देखा कि डर ही वह प्रमुख चीज़ है जो हमें किसी भी भाषा को सीखने से रोकती है। एक विदेशी भाषा होने के नाते हमारे दिमाग़ में अँग्रेज़ी की छवि एक राक्षस जैसी बन गई है। सबसे पहले तो हमें खुद को इसके अनुकूल बनाना चाहिए। फिर हमें खुद को वातावरण में सहज बनाने का प्रयास करना चाहिए जहाँ यदि हम कोई ऐसा वाक्य बोल दें जो व्याकरण की दृष्टि से सही न हो तो हम इस बात को लेकर दूसरों की प्रतिक्रियाओं की परवाह न करें। केवल तभी इस 'राक्षस' को भगाना सम्भव हो पाएगा ।

पोम्पा घोषाल अप्रैल 2016 से अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़ में बतौर शिक्षक कार्यरत हैं। उन्होंने रवि शंकर विश्वविद्यालय रायपुर से गणित में स्नातक, अँग्रेज़ी साहित्य में एम.ए. और बी.एड. किया है। उन्होंने 1997 में निजी स्कूल से अपना अध्यापन कैरियर प्रारम्भ किया और कई स्कूलों में गणित, विज्ञान व अँग्रेज़ी के शिक्षक के तौर पर कार्य किया। वह सांस्कृतिक कार्यक्रमों में रुचि रखती हैं। उनसे pompa.ghoshal@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : कविता तिवारी